अध्याय - द्वितीय
संबंधित शोध

D - 169

अध्याय - द्वितीय
संबंधित शोध कार्य

2.1 प्रस्तावना :

सतत् मानव प्रयासों से भूतकाल में एकत्रित ज्ञान का लाभ अनुसंधान में मिलता है। अनुसंधायक द्धारा प्रस्तावित अध्ययन से, प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में, संबंधित समस्याओं पर पहले किये गये कार्य से बिना जोड़े, स्वतंत्र रूप से अनुसंधान कार्य नहीं हो सकता। किसी भी अनुसंधान अधययन की योजना में महत्वपूर्ण कदमों में एक अनुसंधान जर्नलों, पुस्तकों, अनुसंधान विवेचना व अन्य सूचना स्त्रोतों की सावधानी पूर्वक समीक्षा करना है।

संबंधित साहित्य की समीक्षा से अनुसंधावक को अन्य व्यक्तियों द्धारा किये गये कार्य से पूर्ण परिचय हो जाता है और अपने उद्देश्यों का स्पष्ट व संक्षिप्त रूप से वर्णन कर सकता है। संबंधित साहित्य के ज्ञान से अनुसंधायक को अपने क्षेत्र की सीमा निर्धारण करने में सहायता मिलती है। उसे अपनी समस्या के परिसीमन व उसकी परिभाषा करने में भी सहायता मिलती है। संबंधित साहित्य की समीक्षा से अनुसंधायक, अनुसंधान प्रक्रिया को समझता है जिससे यह ज्ञान होता है कि अध्ययन किस प्रकार के है। उसे पहले अध्ययनों में प्रयुक्त उपकरणों की भी जानकारी मिलती है, जो सफल व उपयोगी रहे थे। उसे उन सांख्यिकी विधियों की अंतदृष्टि भी मिल जाती है, जिनके द्धारा परिणामों की वैधता सिद्ध की जाती है।

संबंधित साहित्य की सूचना के मुख्य स्त्रोतों में, लेखक अपने कार्य को सीधे ही अनुसंधान लेख, पुस्तकों, एक विषयक लेखों, अनुसंधान विवेचना या शोध लेख के माध्यम से प्रतिवेदित करता है। गौण स्त्रोतों में अनुसंधायक अन्य व्यक्तियों द्धारा अध्ययन से प्राप्त परिणामों को संक्षिप्त रूप में बनाकर उनकी व्याख्या करता है।

2.2 पूर्व शोध अध्ययन:-

प्रस्तुत अध्याय में लघुशोध से संबंधित शोधकार्य एवं लघुशोधकार्य का वर्णन किया है। यह सभी शोधकार्य एवं लघुशोध कार्य किसी न किसी रूप में सामाजिक -आर्थिक स्तर, शैक्षिक उपलब्धि व उपलब्धि अभिप्रेरणा से संबंधित हैं, जो शोधकर्ता के शोध शीर्षक से संबंधित है।

1. डॉ. माथुर (1972) ने " स्कूल अचीवमेंट एन्ड इंटेलीजेन्स इन रिलेशन टू सम इकोनोमिक बेक - ग्राउन्ड फेक्टर्स "शीर्षक के अन्तर्गत शोध कार्य किया।

डॉ. माथुर ने अमृतसर के एक उच्चस्तर माध्यमिक विद्यालय के कक्षा 9 में अध्ययनरत 100 विद्यार्थियों को न्यादर्श के लिये चयनित किया, जो विभिन्न पारिवारिक, व्यावसायिक स्तर से लिये गये थे। उन्होंने एक शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण तथा सामाजिक-आर्थिक स्तर के परीक्षण (प्रश्नावली) तैयार की। उन्होंने यह निष्कर्ष निकाला कि बुद्धि, उपलब्धि तथा पारिवारिक स्थिति कारक के बीच परस्पर घनिष्ठ संबंध है।

2. निरंज, रामलखन (1974) ने " इफेक्ट्स ऑफ सोशियो इकोनॉमिक बेक ग्राउन्ड ऑफ एजूकेशन अचीवमेंट ऑफ 8 क्लास स्टूडेण्ट्स " शीर्षक के अन्तर्गत लघु शोध कार्य किया।

उन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि बालकों की उपलब्धि उनकी सामाजिक - आर्थिक पृष्ठभूमि से प्रभावित होती है, बालकों की शैक्षिक उपलब्धि का माता- पिता की शिक्षा व उनकी आय से घनिष्ठ संबंध होता है जिन बालकों के माता - पिता उच्च शिक्षित व उच्च वेतन पाने वाले होते हैं उनकी शैक्षिक उपलब्धि उच्च होती हैं।

3. ठाकुर एस.बी.एस (1977) ने "सोसियो- इकोनॉमिक बेक ग्राउन्ड एण्ड एजूकेशनल अचीवमेन्ट ऑफ स्टूडैण्ट्स ढोज एडमिटेड इन ग्रेड 9 " शीर्षक के अन्तर्गत लघुशोध कार्य किया।

इन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि विद्यार्थियों की शिक्षा अभिभावकों की आय एवं व्यवसाय दोनों से प्रभावित होती है, विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का उनके सामाजिक- आर्थिक पृष्ठभूमि से घनिष्ठसंबंध है तथा यह उनकी शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करती है।

4. राजवैद्य के. (1980) ने "इन्दौर नगर की मुस्लिम महिलाओं के सामाजिक - आर्थिक स्तर का अध्ययन 400 परिवारों को आधार बनाकर किया।"

उनके अध्ययन के उद्दैश्य, मुस्लिम महिलाओं के शैक्षिक स्तर से संबंधित तथ्यों का संतुलन करना, जो उनके सामाजिक स्तर का निर्माण करने की दशा में हैं व मुस्लिम महिलाओं में विद्यमान रूढ़िवादिता के स्तर से संबंधित तथ्यों की जानकारी प्राप्त करना आदि थे। उन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि महिलायें शिक्षित हों या अशिक्षित, कार्यरत हों या घरेलू, घर के सारे कार्य वे स्वयं ही करती हैं व शिक्षित एवं अशिक्षित सभी महिलायें घरेलू कार्यों में समान रूचि रखती हैं।

5. शर्मा - (1982) ने राजस्थान में किये गये अध्ययन में पाया कि बालिकाओं के शैक्षिक पिछड़ेपन के लिये परिवार का सामाजिक - आर्थिक सतर, शैक्षिक पर्यावरण एवं रूढ़िवादिता प्रमुख रूप से उत्तरदायी है।

6. शुक्ला - (1984) ने "अचीवमेन्ट ऑफ प्राइमरी स्कूल चिल्ड्रन इन रिलेशन टू ढेयर सोशियो - इकोनोमिक स्टेट्स एण्ड फेमिली साइज" शीर्षक के अन्तर्गत बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय से अपना शोध कार्य सम्पन्न किया।

इस शोध कार्य के उद्देश्य, प्राथमिक शाला के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में ग्रामीण एवं नगरीय तथा लिंग आधार पर अन्तर ज्ञात करना, सामाजिक - आर्थिक स्तर तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य संबंध ज्ञात करना व शैक्षिक उपलब्धि एवं परिवार के आकार के मध्य संबंध ज्ञात करना व शैक्षिक उपलब्धि एवं परिवार के आकार के मध्य संबंध ज्ञात करना। अध्ययन वाराणसी के 200 ग्रामीण एवं 300 नगरीय प्राथमिक शाला के विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में चुना गया। उन्होंन अपने अध्ययन में पाया कि शैक्षिक उपलब्धि के परिप्रेक्ष्य में प्राथमिक शाला विद्यार्थियों में लिंग एवं ग्रामीण नगरी आधार पर कोई सार्थक अन्तर प्राप्त नहीं हुआ व सामाजिक आर्थिक स्तर, शैक्षिक उपलब्धि से धनात्मक एवं सार्थक रूप से संबंधित है।

7. नारंग, आर.एच. (1987) ने "ए कम्पेरेटिव स्टडी ऑफ द सोसियो- इकोनोमिक एण्ड होप फेक्टर्स अफेक्टिंग द अकेडमिक अचीवमेन्ट ऑफ बॉयज एण्ड गर्ल्स (10 एण्ड 11 इयर्स)इन द अर्बन एण्ड रूरल एरियाज" शीर्षक के अन्तर्गत शोध कार्य किया।

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य कस्बे, शहर एवं ग्रामीण क्षेत्रों के बालक तथा बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि पर परिवार की सामाजिक एवं आर्थिक स्तर के प्रभाव का अध्ययन करना। उन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि नगरीय, कस्बाई, ग्रामीण क्षेत्रों के बालक तथा बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि सामाजिक - आर्थिक स्तर से प्रभावित नहीं होती है।

8. सीताराम ए.एस. (1988) ने "बैंगलोर में झुग्गी बस्तियों के बच्चों के लिये उपलब्ध शैक्षिक सुविधाओं, उनके समुचित प्रयोग एवं बच्चों के सामाजिक-आर्थिक पर्यावरण संबंधी अध्ययन किया।" इस शोध से यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि अभिभावक का व्यवसाय, परिवार की मासिक आय, जाति, परिवार के अन्य सदस्यों की शिक्षा, परिवार का आकार आदि परिस्थितियाँ बालक-बालिकाओं की शिक्षा को सक्रिय रूप से प्रभावित करते हैं।

9. दीवानसेन, पौल पी. (1990) ने "सोसियो - इकोनोमिक स्टेट्स, अचीवमेंट ऑफ हायर सेकण्डरी स्टूडेण्ट्स इन पासुम्पन थेवर तिरूमगन डिसट्रिक्ट" शीर्षक पर शोधकार्य किया। इस शोधकार्य के उद्देश्य हायर सेकण्डरी छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि,

सामाजिक - आर्थिक स्तर व उपलब्धि अभिप्रेरणा के बीच संबंध का अध्ययन करना व हायर सेकण्डरी छात्रों के विभिन्न समूहों के मध्य सामाजिक-आर्थिक स्तर, उपलब्धि अभिप्रेरणाा व शैक्षिक उपलब्धि में अन्तर को ज्ञात करना थे। उन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि हायर सेकण्डरी छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि, सामाजिक-आर्थिक स्तर व उपलब्धि अभिप्रेरणा में सार्थक व सकारात्मक संबंध है।

10. सूद, रमन (1991) ने "एकेडमिक अचीवमेंट ऑफ प्री-इन्जीनियरिंग स्टूडेण्ट्स इन रिलेशन टू देयर सोसियो-इकॉनोमिक स्टेट्स" शीर्षक पर शोध कार्य किया।

इस शोध कार्य का उद्देश्य प्री-इन्जीनियरिंग छात्रों के सामाजिक - आर्थिक स्तर के विभिन्न स्तरों पर शैक्षिक उपलब्धि में अन्तर ज्ञात करना था। उन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि सामाजिक-आर्थिक स्तर व शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक संबंध नहीं है व विषयों की उपलब्धि व विभिन्न सामाजिक-आर्थिक स्तर (उच्च, मध्यम व निम्न) में कोई सार्थक संबंध नहीं है।

11. शर्मा, संजय कुमार (1990) ने "इफेक्ट ऑफ क्लासरूम एनवार्नमेन्ट ऑन अचीवमेन्ट मोटीवेशन एण्ड एटीट्यूड इन साइन्स" शीर्षक के अन्तर्गत लघुशोध कार्य सम्पन्न किया।

इस अध्ययन में इन्होंने पाया कि छात्रों की उपलब्धि-अभिप्रेरणा व विज्ञान में अभिवृत्ति तथा कक्षा-कक्ष वातावरण व विज्ञान में उपलब्धि के बीच सार्थक अन्तर नहीं है। छात्रों की कक्षा-कक्ष वातावरण, उपलब्धि व विज्ञान अभिवृत्ति से संबंधित है, उपलब्धि-अभिप्रेरणा विज्ञान अभिवृत्ति व कक्षा-कक्ष वातावरण के बीच त्रिकोणीय संबंध उपलब्धि अभिप्रेरणा व विज्ञान अभिवृत्ति के उच्च संबंध से सूचित हो रही है।

12. खान, कु. जावेद्वा (1991) ने "भोपाल की मुस्लिम छात्राओं की सामाजिक-आर्थिक स्थिति का उनकी विषयगत उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन" शीर्षक पर अपना लघु शोध कार्य सम्पन्न किया।

अध्ययन द्वारा यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि मुस्लिम छात्राओं द्वारा शैक्षिक अवसरों का उपयोग एवं शैक्षिक उपलब्धि प्राप्त करने के मार्ग में उनकी संस्कृति एवं सामाजिक मूल्यों का प्रभाव अधिक पड़ता है।

13. रानी, राधा - (1992) ने "ए स्टडी इन्टेलीजेन्स, सोसियो इकॉनोमिक स्टेट्स, अचीवमेन्ट-मोटीवेशन एण्ड एकेडमिक अचीवमेन्ट विद रिफरेन्स टू प्यूपिल्स बिहेवियर इन क्लास-रूम " शीर्षक पर शोध कार्य किया।

इस शोध कार्य के उद्देश्य कक्षा में छात्रों के व्यवहार में अन्तर को ज्ञात करना, शैक्षिक उपलब्धि व सामाजिक - आर्थिक स्तर के बीच संबंध को जानना, उपलब्धि अभिप्रेरणा व शैक्षणिक उपलब्धि के संबंध का अध्ययन करना व कक्षा-कक्ष में छात्रों के व्यवहार व बुद्धि के बीच संबंध का अध्ययन करना। उन्होंने अपने निष्कर्ष में पाया कि शैक्षिक उपलब्धि में लिंग अन्तर है व लड़कियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा और कार्य-क्रियाकलाप सभी चर शैक्षिक उपलब्धि को सकारात्मक योगदान देते हैं।

14. हरिकृष्णन्, एम, (1992) ने "ए स्टडी ऑफ एकेडमिक अचीवमेंट ऑफ द स्टूडेण्ट्स ऑफ द हायर सेकण्डरी स्टेज इन रिलेशन टू अचीवमेंट मोटीवेशन एण्ड सोसियो इकोनोमिक स्टूडेण्ट्स "शीर्षक पर शोध कार्य किया।

इस शोध कार्य का उद्देश्य छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि, उपलब्धि अभिप्रेरणा और सामाजिक आर्थिक स्तर के मध्य संबंध का अध्ययन करना। इन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि लड़कों की अपेक्षा लड़कियों की उपलब्धि में उच्च मध्यमान है। सामाजिक-आर्थिक स्तर व शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक संबंध पाया गया व शैक्षिक उपलब्धि, उपलब्धि अभिप्रेरणा से संबंधित नहीं पाई गई ।

15. सरकार, कु. राखी- (1993) ने "अल्पसंख्यक और बहुसंख्यक बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि पर सामाजिक-आर्थिक स्तर का प्रभाव , क्षेत्र-भोपाल नगर "शीर्षक के अन्तर्गत लघुशोध कार्य किया।

अध्ययन द्वारा यह निष्कर्ष निकला कि शासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत अल्पसंख्यक एवं बहुसंख्यक छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि को सामाजिक - आर्थिक स्तर एवं घर का वातावरण विषेघ रूप से प्रभावित करता है।

16. शर्मा, राजकुमार (1994) ने " अल्पसंख्यक एवं बहुसंख्यक वर्ग के छात्रों की सामाजिक-आर्थिक स्तर का उनकी उपलब्धि पर प्रभाव (पुराने भोपाल नगर के सन्दर्भ मे) "शीर्षक पर लघु शोध कार्य किया। इस अध्ययन में उन्होंने पाया कि अल्पसंख्यक वर्ग के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि बहुसंख्यक छात्रों की तुलना में कम है स कारण अल्पसंख्यक

वर्ग के छात्रों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति बहुसंख्यक वर्ग के छात्रों की तुलना में कम होना है। साथ ही यह तथय उन्मुख उभर कर आया कि दोनो वर्ग के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि पर न्यूनाधिक रूप से सामाजिक-आर्थिक स्थिति का प्रभाव पड़ता है।

17.मैसी, कु. नमिता (1995) ने " सामाजिक-आर्थिक सन्दर्भ में बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि "शीर्षक पर लघु शोध कार्य किया।

इन्होंने अपने अध्ययन मे पाया कि बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि बालकों के समान सामाजिक-आर्थिक स्तर होने पर भी बालकों की शैक्षिक अवसर प्राप्त होने पर उसका सदुपयोग करती है। व यह तथ्य भी उभरकर आया कि शासकीय विद्यालयों के छात्रा-छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि को उनका सामाजिक -आर्थिक स्तर प्रभावित करता है। जबकि बी.एच.ई.एल. क्षेत्र के विद्यालय का उपयुक्त शैक्षणिक वातावरण है।

18.राणा, कु. नीलम (1996) ने "ए स्टडी ऑफ अचीवमेन्ट मोटीवेशन अमंग स्टूडेण्ट्स एट एलीमेन्ट्री लेवल "शीर्षक पर लघु शोध कार्य किया।

इन्होंने अपने अध्ययन की सम्पूर्ण समूह के सामान्य और अनूसूचित जाति के छात्रों की उपलब्धि अभिप्रेरणा में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया व ग्रामीण एवं नगरीय समूह के छात्रों की उपलब्धि अभिप्रेरणा में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

19. प्रमोद, शांथी (1996) ने "फ्यूचर टाइम पर्सपेक्टिव कॉगनीटिव इफीशियन्सी, अचीवमेंट मोटीवेशन, एन्जॉयटी एण्ड एकेडमिक पर्फोमेंस एमंग 11 स्टेण्डर्ड वॉयज एण्ड गर्ल्स "शीर्षक के अन्तर्गत शोध कार्य किया।

इस शोध कार्य के उद्देश्य शैक्षिक निष्पादन, चिन्ता, उपलब्धि-अभिप्रेरणा, ज्ञानात्मक क्षमता व भविष्य के परिप्रेक्ष्य में संबंध स्थापित करना, शैक्षिक निष्पादन से सामाजिक-आर्थिक भिन्नता व लिंग भिन्नता की तुलना करना था। इन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि उपलब्धि अभिप्रेरणा, शैक्षिक निष्पादन पर ज्यादा प्रभावशाली है जबकि चिन्ता व भविष्य परिप्रेक्ष्य का प्रभाव इसके बाद पड़ता है।

20. मीनलकोडी, बी. (1997) ने "ए स्टडी ऑफ हायर सेकण्डरी स्कूल स्टूडेण्ट्स अचीवमेंट इन जूलॉजी इन रिलेशन टू एन्जॉयटी, अचीवमेंट मोटीवेशन एण्ड सेल्फ कॉन्सेप्ट "शीर्षक पर शोध कार्य किया।

इस शोध कार्य का उद्देश्य विभिन्न सामाजिक आर्थिक स्तर, विभिन्न व्यवसाय, भिन्न-भिन्न स्कूल, भिन्न-भिन्न स्थान, विभिन्न लिंग का पूरे न्यादर्श के साथ प्रत्यय, उपलब्धि अभिप्रेरणा व चिन्ता के संबंध में जन्तु विज्ञान में उपलब्धि का स्तर ज्ञात करना। उन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि बालक और बालिकाओं के उपलब्धि प्राप्तांक व उपलब्धि अभिप्रेरणा में सार्थक अन्तर है किन्तु स्वप्रत्यय व चिन्ता में सार्थक अन्तर नहीं है।

21.तिवारी, कु. नीलेश (1998) ने नगरीय एवं ग्रामीण क्षेत्रों में बालिकाओं के शाला-अप्रवेशी एवं शालात्यागी होने के प्रमुख कारणों का तुलनात्मक अध्ययन शीर्षक पर लघु शोध कार्य किया।

इन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि प्राथमिक शिक्षा प्राप्त करने के प्रति ग्रामीण एवं नगरीय बालिकाओं के व्यक्तिगत दृष्टिकोण में अन्तर पाया गया। ग्रामीण क्षेत्रों की शालात्यागी बालिकाओं की अपेक्षा शहरी क्षेत्र की बालिकायें अधिक जागरूक पाई गयी। ग्रामीण क्षेत्र की शाला त्यागी बालिकायें शहरी क्षेत्र की शाला-त्यागी बालिकाओं की तुलना में गृहकार्यों में अधिक संलग्न रहती हैं।

22. अली, मेहमूद (1998) ने "पर्सनल वेल्यूज, केरियर एस्पिरेशन, एकेडमिक अचीवमेंट एण्ड सोसियो, इकॉनोमिक स्टेट्स एस डिटरमिनेशन ऑफ एजूकेशनल च्वॉइस एट सीनियर सेकण्डरी लेवल" शीर्षक पर शोधकार्य किया।

इस शोधकार्य का उद्देश्य शिक्षा संबंधी चुनाव, शैक्षिक उपलब्धि, सामाजिक-आर्थिक स्तर, पेशे की आकांक्षा व व्यक्तिगत मूल्यों के संबंध का अध्ययन करना था। इन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि शैक्षिक उपलब्धि का सामाजिक-आर्थिक स्तर, व्यावसायिक आकांक्षा व ज्ञानात्मक मूल्य से सकारात्मक सहसंबंध है व सामर्थ्य मूल्यों से सकारात्मक संबंध है। विज्ञान व कला समूह के पक्ष में शैक्षिक उपलब्धि सकारात्मक रूप से सामाजिक-आर्थिक स्तर से संबंधित है परन्तु वाणिज्य समूह के पक्ष में ये चर संबंधित नहीं पाये गये।

उपरोक्त संबंधित शोधकार्यों व लघु शोधकार्यों के अध्ययन व निष्कर्ष से हमें यह पता चलता है कि बालक व बालिकाओं की उपलब्धि अभिप्रेरणा व सामाजिक - आर्थिक स्थिति उनकी शैक्षणिक उपलब्धि को किसी न किसी प्रकार से प्रभावित अवश्य करती है।